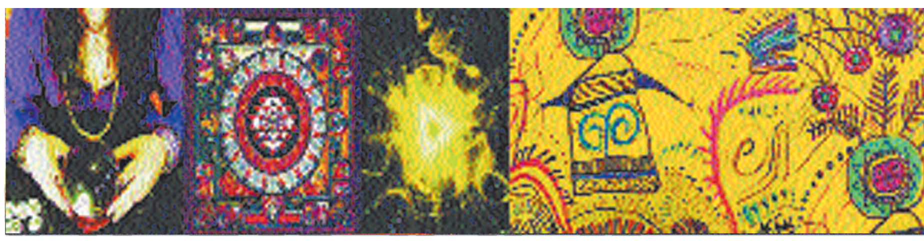

ज्योतिष निरंतर विवाद और बहस का विषय

समाजशास्त्रीय एवं सांस्कृतिक दृष्टि से एक गहन विवेचन

ज्योतिषाचार्य
तेजस्कर पाण्डेय

मानव सभ्यता के इतिहास में ज्योतिष का स्थान अत्यंत प्राचीन और महत्वपूर्ण रहा है. आकाश में चमकते तारों, ग्रहों और नक्षत्रों की गति ने प्रारम्भ से ही मनुष्य की जिज्ञासा को आकर्षित किया. ऋतुओं का परिवर्तन, कृषि की बुआई और कटाई, वर्षा का समय, व्रत और पर्व की तिथियाँ, यज्ञ और अनुष्ठान - इन सबका निर्धारण ज्योतिषीय गणना से होता रहा. भारत ही नहीं, यूनान, मिस्र, बेबीलोन और चीन जैसी प्राचीन सभ्यताओं ने भी इसे अपने सामाजिक और सांस्कृतिक जीवन का अंग बनाया. किंतु जैसे-जैसे आधुनिक विज्ञान का उदय हुआ और अनुभवजन्य प्रमाणों पर बल दिया जाने लगा, वैसे-वैसे ज्योतिष पर प्रश्न उठने लगे. आज की स्थिति यह है कि एक ओर करोड़ों लोग इसे आत्मचिंतन, मार्गदर्शन और आध्यात्मिक सहारे के रूप में स्वीकार करते हैं, तो दूसरी ओर विज्ञानवादी दृष्टिकोण रखने वाले विद्वान इसे अंधविश्वास या छद्मविज्ञान मानते हैं. यही कारण है कि ज्योतिष निरंतर विवाद और बहस का विषय बना हुआ है.

ज्योतिष की आलोचना का सबसे बड़ा आधार इसकी प्रमाणिकता को लेकर है. विज्ञान की दृष्टि से कोई भी सिद्धांत तभी मान्य होता है जब वह परीक्षण योग्य हो, बार-बार दोहराने पर भी समान परिणाम दे और जिसे गलत सिद्ध किया जा सके. आलोचकों का कहना है कि ज्योतिष इन कसौटियों पर खरा नहीं उतरता. राशिफल अथवा जन्मपत्री में कही जाने वाली बातें इतनी सामान्य होती हैं कि किसी भी व्यक्ति पर लागू हो सकती हैं. इसे ही मनोविज्ञान में ''बर्नम प्रभाव'' कहा जाता है, जिसके अनुसार लोग सामान्य कथनों को भी अपने जीवन से सटीक मान लेते हैं. अनेक वैज्ञानिक अध्ययनों ने यह दिखाया कि जन्म के समय ग्रह-नक्षत्रों की स्थिति और व्यक्ति के स्वभाव या जीवन की घटनाओं के बीच कोई ठोस और प्रमाणित संबंध सिद्ध नहीं किया जा सकता.

इसके विपरीत ज्योतिष के समर्थक यह मानते हैं कि इसका मूल्य भविष्यवाणी की शुद्धता में नहीं बल्कि इसके प्रतीकात्मक और मनोवैज्ञानिक पक्ष में है. प्रसिद्ध मनोवैज्ञानिक कार्ल युंग ने इसे ''सार्थक संयोग'' की भाषा कहा. उनके अनुसार ग्रह और नक्षत्र बाहरी घटनाओं और आंतरिक मनोवैज्ञानिक अवस्थाओं के बीच एक सेतु का कार्य करते हैं. ज्योतिष व्यक्ति को आत्मचिंतन और आत्मज्ञान का अवसर देता है. यह उसके जीवन की प्रवृत्तियों, शक्तियों और चुनौतियों को समझने में सहायक होता है. इस दृष्टि से यह केवल भाग्य बताने का साधन नहीं बल्कि जीवन की दिशा देने वाला दर्पण है. यदि ऐतिहासिक दृष्टि से देखा जाए तो प्रारम्भ में ज्योतिष को विद्वानों की मान्यता प्राप्त थी. यूनान में टॉलेमी और हिप्पार्कस ने इसे खगोल विद्या के साथ जोड़ा. प्राचीन भारत में वेदों और पुराणों में इसका विस्तृत उल्लेख है. किंतु मध्यकालीन यूरोप में ईसाई धर्मगुरुओं ने इसे विधर्म मान लिया. उनका कहना था कि यदि ग्रह-नक्षत्र मानव के जीवन को नियंत्रित करते हैं तो ईश्वर की सर्वशक्ति और मानव की स्वतंत्र इच्छा का क्या होगा. संत ऑगस्टीन जैसे विद्वानों ने इसे स्पष्ट रूप से अस्वीकार किया. पुनर्जागरण और प्रबोधन काल में जब अनुभवजन्य विज्ञान का विकास हुआ तो गैलीलियो, केपलर और न्यूटन ने ज्योतिष से दूरी बनाई. भारत में हालांकि स्थिति भिन्न रही. यहाँ विवाह, संस्कार, गृहप्रवेश, अन्नप्राशन, नामकरण, शिक्षा आरम्भ और मृत्यु संस्कार तक में शुभ मुहूर्त देखा जाने लगा. इससे स्पष्ट है कि भारतीय समाज में ज्योतिष सांस्कृतिक आत्मा का हिस्सा बना रहा.

ज्योतिष से जुड़ी अनेक भ्रांतियाँ भी विवाद का कारण बनती हैं. लोकप्रिय माध्यमों में इसे भाग्यवाद और नियतिवाद से जोड़ा जाता है. अखबारों में छपने वाले सामान्य राशिफल और सोशल मीडिया पर दिखाई देने वाली त्वरित भविष्यवाणियाँ इस भ्रांति को और मजबूत करती हैं. जबकि परम्परागत विद्वानों का मानना है कि ज्योतिष का उद्देश्य भविष्य को पत्थर की लकीर की तरह निश्चित करना नहीं है, बल्कि जीवन की प्रवृत्तियों और संभावनाओं को समझाना है. इसी प्रकार यह भ्रांति भी फैली हुई है कि ज्योतिष केवल मनोरंजन है. अनेक टेलीविजन कार्यक्रमों और ऑनलाइन मंचों ने इसे तुच्छ भविष्यवाणी का खेल बना दिया है. जबकि वस्तुत: इसकी जड़ें गहरी आध्यात्मिक और सांस्कृतिक परम्परा में हैं.

भारतीय समाज में ज्योतिष के दुरुपयोग ने भी इसकी छवि को धूमिल किया है. कई बार इसे भय और अंधविश्वास पैदा करने का साधन बनाया जाता है. ग्रहदोष निवारण के नाम पर महंगे रत्न पहनाए जाते हैं, यज्ञ और दान-दक्षिणा कराई जाती है. विवाह में कुंडली मिलान को जातीय और सामाजिक भेदभाव को बनाए रखने का साधन बना लिया जाता है. कई बार युवाओं के प्रेमविवाह केवल इस कारण रोक दिए जाते हैं कि उनकी कुंडलियाँ मेल नहीं खातीं. राजनीति और व्यवसाय में भी इसका प्रयोग शुभाशुभ तिथियों को निर्धारित करने के लिए होता है. नेताओं द्वारा चुनावी सभाओं या घोषणाओं का समय ज्योतिष के आधार पर तय किया जाता है. यह सब दर्शाता है कि कैसे परम्परा के नाम पर स्वार्थ और शोषण की प्रवृत्तियाँ पनपती हैं. नैतिक दृष्टि से भी अनेक प्रश्न उठते हैं. ज्योतिषी के पास ग्राहक की निजी जानकारी रहती है, जिसकी गोपनीयता बनाए रखना उसका धर्म है. परंतु यह हमेशा सम्भव नहीं हो पाता. कुछ ज्योतिषी भय फैलाने वाली बातें कहते हैं, जैसे कि ग्रहदशा के कारण जीवन नष्ट हो जाएगा या अकाल मृत्यु होगी. यह पूरी तरह अनुचित है. ज्योतिष का उद्देश्य भय नहीं बल्कि सकारात्मक दृष्टि और आत्मबल प्रदान करना होना चाहिए. उसे जीवन की चुनौतियों को अवसर में बदलने की दिशा दिखानी चाहिए.

डिजिटल युग में ज्योतिष का व्यावसायीकरण और भी गहरा हो गया है. आज असंख्य मोबाइल अनुप्रयोग, वेबसाइट और सामाजिक माध्यमों पर ज्योतिष सेवाएँ उपलब्ध हैं. लोग ऑनलाइन जन्मपत्री और उपाय खरीदते हैं. इनमें से कई सेवाएँ केवल लाभ कमाने के लिए होती हैं. इससे उपभोक्ता संरक्षण का प्रश्न भी उठता है और ज्योतिष की विश्वसनीयता भी घटती है.

> ज्योतिष का स्थान आधुनिक समाज में जटिल और बहुआयामी है. यह विज्ञान की कठोर कसौटी पर भले ही खरा न उतरता हो, किंतु इसका सांस्कृतिक, मनोवैज्ञानिक और आध्यात्मिक महत्व निर्विवाद है. यदि इसे अंधविश्वास और शोषण से मुक्त कर ईमानदारी और नैतिकता के साथ अभ्यास किया जाए तो यह आत्मज्ञान और आत्मविकास का प्रभावी साधन सिद्ध हो सकता है. इसके विपरीत यदि इसे व्यावसायिकता, भय और अंधविश्वास का उपकरण बनाया जाएगा तो इसकी विश्वसनीयता और भी घटेगी. अत: आवश्यकता है कि ज्योतिष पर संतुलित और सूचित विमर्श हो, जो इसकी सीमाओं और संभावनाओं दोनों को स्वीकार करे. तभी इसे एक सांस्कृतिक और आत्मविश्लेषणात्मक परम्परा के रूप में मान्यता मिल सकेगी.

राशिफल

दिनांक- 07 से 13 सितम्बर 2025 तक

ज्योतिषाचार्य प्रियंका नारायणशंकर व्यास,
कोतवाली बाजार, जबलपुर मो.नं. 098266-21998

साप्ताहिक ग्रहस्थिति- इस सप्ताह सूर्य सिंह राशि में, मंगल कन्या राशि में ता. 13 को 8/42 रात से तुला राशि में, बुध सिंह राशि में, गुरू मिथुन राशि में, शुक्र कर्क राशि में, शनि मीन राशि में, राहु कुम्भ राशि में, केतु सिंह राशि में और चन्द्रमा कुम्भ मीन मेष और वृषभ राशि में संचरण करेगा.

ग्रहयोगों का प्रभाव :- शुक्र से तीसरा मंगल है और मंगल से एकादश भाव में शुक्र है, शुक्र और मंगल का त्रिएकादश योग बन रहा है, मंगल शुक्र की राशि में है और शुक्र सूर्य की राशि में है जिसके प्रभाव से कहीं राजनैतिक हलचल और अग्निकाण्ड से नुकसान हो सकता है, सीमा पर सैन्य हलचल बढ़ेगी, मुस्लिम देशों में आतंकवादी घटनायें घटेंगी, उश्ररप्रदेश, मंध्यप्रदेश, छश्रीसगढ़, राजस्थान में बादल चाल कहीं अधिक वर्षा तो कहीं हल्की बारिश का योग बनेगा, कहीं कहीं सूखे की स्थिति भी देखने को मिलेगी, खेती किसानी मे कीट पतंगों का प्रकोप बढ़ेगा. ता. 3 मंगल चित्रा नक्षत्र में प्रवेश करता है जिसके प्रभाव से बाजारों में तेजी का उछाल आयेगा, गेहूं, चना, जौ, रूई, सूत, सोना चांदी में तेजी का झटका लगेगा, गुड़, खाड़, शक्कर आदि पदार्थों में मंदी रहेगी. ता. 13 को मंगल तुला राशि में प्रवेश करता है जिसके प्रभाव से बाजारों में पहले मंदी होगी बाद में तेजी आयेगी, कपास, रूई, रेशम, सूत, घी, तेल, अलसी, ऐरेण्डा, लोहा, सरसों, चावल, उड़द, ज्वार, सुपाड़ी, बांस, नील एवं डिटरजेन्ट पाउडर में तेजी का लाभ मिलेगा..

पर्व/व्रत/त्यौहार :

रविवार	07 सितम्बर को	महालय प्रारंभ, स्नानदान व्रत पूर्णिमा,
सोमवार	08 सितम्बर को	प्रतिपदा श्राद्ध
मंगलवार	09 सितम्बर को	द्वितीया श्राद्ध
बुधवार	10 सितम्बर को	तृतिया श्राद्ध, संकष्टी गणेश चतुर्थी व्रत
गुरूवार	11 सितम्बर को	चतुर्थी श्राद्ध
शुक्रवार	12 सितम्बर को	पंचमी एवं षष्ठी श्राद्ध
शनिवार	13 सितम्बर को	सप्तमी श्राद्ध

मेष

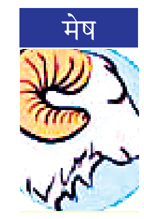

इस सप्ताह कुछ नये व्यवसायिक अनुबंधों पर विचार हो सकता है. संगीत के क्षेत्र में रूचि एवं सफलता मिलेगी. आप वित्तीय स्थिति से प्रसन्न रहेंगे. बच्चों की उपलब्धियों पर हर्ष होगा. यात्रा में बेहतर समझौते होंगे. मान सम्मान में वृद्धि होगी. अनजान लोंगों से सतर्कता रखें. जीवनसाथी के स्वास्थ्य की चिन्ता रह सकती है. कैरियर में पहले से अच्छे प्रस्ताव मिलेंगे

वृषभ

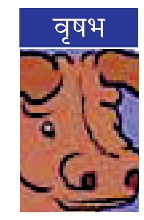

इस सप्ताह आप अपनी असली ताकत को पहचानकर आगे बढ़ेंगे. लाभ पाने के लिये कार्य को सही दिशा व गति मिलेगी. घर के नवीनीकरण एवं साज सज्जा पर खर्च होगा. कार्य क्षेत्र में उपलब्धियां मिलेंगी. रूकी हुई तरक्की मिलेगी. प्रियजनों के संबंध में चिन्ता रह सकती है. स्त्री जाति का सहयोग आपके लिये लाभदायक रहेगा.

मिथुन

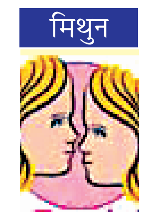

इस सप्ताह अपनी योजनाओं को व्यवसायिक रूप प्रदान करने की कोशिश करेंगे. सामाजिक कार्यो के लिये आप समय एवं धन खर्च करेंगे. किसी अनुभवी के साथ मिलने से कार्य का बोझ कम होगा, अति उत्साह व उतावलीपन में आपसे लापरवाही हो सकती है, सावधान रहें. विरोधी वर्ग अकारण ही परेशानी करने की कोशिश करेंगे.छात्रों की सफलता के योग है.

कर्क

इस सप्ताह आप अपने प्रभाव व पहुंच को बढ़ाने की कोशिश करेंगे, लोगों से मिलने जुलने से संपर्क बढ़ेगा. अपने फैसलों में बदलाव करने से कोई भी कार्य समय पर नहीं होगा, अविवाहित वैवाहिक संबंध निश्चित होने से राहत महसूस करेंगे. कार्यक्षेत्र में आपको निरंतर सफलता मिलेगी, बच्चों की गतिविधियों पर ध्यान दें. पूज्य व्यक्ति का सहयोग बना रहेगा.

सिंह

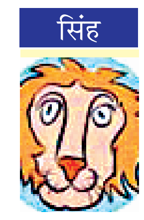

इस सप्ताह अब तक के प्रयासों को फल न मिल पाने से कुछ निराशा का अनुभव होगा, लेकिन अब वक्त आपके पक्ष में बन रहा है, आप किसी तरह की चुनौती स्वीकार करने को तैयार रहेंगे. धार्मिक कार्यो में समय और व धन खर्च होगा. परिश्रम से आपके कई काम निपटने का योग है, संदेह की स्थिति से बचें. कोई पुराना कार्य बनेगा, जिससे आपको शांति और प्रसन्नता मिलेगी.

कन्या

इस सप्ताह कार्य का दबाव बढ़ेगा, अब तक जो मस्ती का मूड बना हुआ है, वह नहीं रह पायेगा, आपको कार्य पूरा करने के लिये रूके हुये कार्य के तौर तरीकों में बदलाव हो सकता है, स्थायी संपत्ति का विस्तार की योजना बनेगी. छात्रों को प्रतियोगी परीक्षा में सफलता के योग है. मेहनत कर लाभ प्राप्त करेंगे, नवीन कार्यो की योजना पर विचार होगा.

तुला

आपको अपनी पूर्व की पारिवारिक व व्यवसाय से जुड़ी समस्या को सुलझाने की राह नजर आयेगी, कार्यस्थ्ल पर बदलाव लाने काफी लंबे समय से सोच रहे हैं, जो अब पूरा हो जायेगा. प्रियजन के भाग्योदय से प्रसन्नता मिलेगी. घर के मामलों में दूसरों की दखल से परेशानी का अनुभव हो सकता है, जीवनसाथी के स्वास्थ्य का ध्यान रखें. निजी दायित्वों की पूर्ति होगी.

वृश्चिक

इस सप्ताह मेहनत व चतुराई से बड़ी उलझनों को हल करने में सफल होंगे. अपनी ताकत एवं आत्म विश्वास के बल पर खुद को बेहतर सिद्ध करने में सफलता प्राप्त होगी. धन संबंधी मामलों में लाभदायी योजना बनेगी. नये कार्यो में बेहतर लाभ की संभावना है. छोटी मोटी बातों पर चिन्ता हो सकती है, साहस संयम से कार्य करना आपके लिये हितकर रहेगा.

धनु

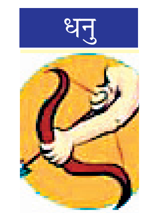

आपका यह सप्ताह लाभदायक एवं खुशियों से भरा होगा. आप खुद को किसी बड़े कारोबार से जोड़ सकते हैं. कैरियर में अपने लक्ष्य को प्राप्त कर लेंगे. भाग्योदय मददगार रहेगा. यात्रायें ज्यादा बनी रहेंगी. आपको लगातार भागदौड़ करना पड़ेगी. योग्य व्यक्तियों से मार्गदर्शन प्राप्त होगा. राजकीय कार्यो में व्यस्तता रहेगी. छुट्टी को लेकर मन बना सकते हैं.

मकर

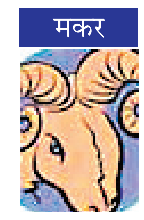

इस सप्ताह आपको सफलता के योग है. अचानक लाभ के अवसर मिलेंगें. शुभ समाचार आपको खुशियों से भर देगा. अविवाहित, विवाह बंधन में बंध सकते है. पारिवारिक योजना में शामिल होंगे. दोस्तों के साथ प्रसन्नता मिलेगी. व्यवस्थाओं में व्यस्त रहेंगे. कुछ विरोधी वर्ग आपकी ओर मदद का हाथ बढ़ा सकते हैं. राजकीय सम्मान प्राप्ति का योग है.

कुम्भ

इस सप्ताह आपको सफलता के लिये लगातार प्रयास करना पड़ेंगे. कार्यक्षेत्र में जबाव देही बढ़ेगी. अचानक कई जिम्मेदारी आ सकती हैं. धार्मिक एवं आध्यात्मिक चर्चाओं से मन को शांति मिलेगी. आप परिवार के साथ खुशियों व प्रसन्नता का अनुभव करेंगे. रचनात्मक क्षमताओं को उभारने में सफलता मिलेगी. करीबी मित्र की सलाह आपके लिये हितकर उपयोगी रहेगी.

मीन

इस सप्ताह मेलजोल व संपर्को का पूरा लाभ मिलेगी. महत्वपूर्ण मामलों में आपकी गंभीरता एवं भौतिक चिन्तन का फायदा मिलेगा, पारिवारिक जीवन में खुशी मिलेगी. पूरी मेहनत के साथ कार्य में जुट जायेंगे. दूसरों की कार्य योजना पर आलोचना न करें. जोखिमदारी कार्यो से बचें. गुमी वस्तु मिलने से प्रसन्नता होगी.

आज चंद्रग्रहण

साल का आखिरी चंद्रग्रहण एक वैज्ञानिक रहस्य

प्रो. विवेकानंद तिवारी
अध्यक्ष, आम्बेडकर पीठ
एचपीयू, शिमला

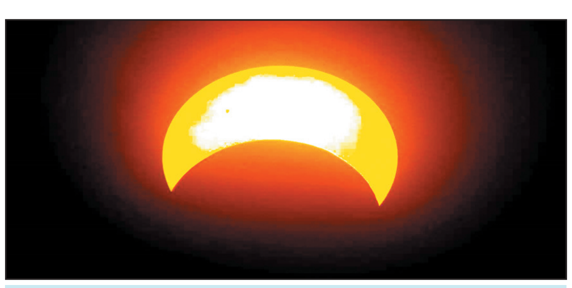

सूतक काल- ग्रहण शुरू होने से पहले एक सूतक काल शुरू होता है, जिसे अशुभ माना जाता है. इस समय में पूजा-पाठ, भोजन पकाने और शुभ कार्यों की मनाही होती है. सूर्य ग्रहण का सूतककाल 12 घंटे पहले और चंद्र ग्रहण का सूतक काल ग्रहण के 9 घंटे पूर्व ही प्रारंभ होकर ग्रहण की समाप्ति तक चलता है.

इस वर्ष भाद्रपद शुक्ल पूर्णिमा तदनुसार 7 सितम्बर 2025 ई. को खग्रास चन्द्रग्रहण लग रहा है जो सम्पूर्ण भारतवर्ष में दृश्य होगा. भारतीय मानक समय के अनुसार यह रात्रि 21-57 बजे से आरम्भ होगा, मध्य रात्रि 23-42 बजे होगा और ग्रहणमोक्ष 8 सितम्बर को 01-27 बजे होगा. चन्द्रग्रहण का सूतक ग्रहण आरम्भ से 9 घण्टे पूर्व आरम्भ हो जाता है, अत: सूतक दिन में 12-57 बजे लग जाएगा. शास्त्राज्ञानुसार सूतक में बालक वृद्ध व रोगी को छोड़कर किसी को भोजन नहीं करना चाहिये, और ग्रहण आरम्भ होने के एक प्रहर पूर्व से ही बालक वृद्ध व रोगी सहित किसी को भोजन नहीं करना चाहिये. सूर्योदय के उपरान्त भोजन ग्रहण करें. ग्रहणकाल में गर्भिणी स्त्री को गर्भरक्षा हेतु उदर पर गाय के गोबर का लेप करना चहिये. दूध दही घी जल ग्रहण से दूषित नहीं होते अन्य खाद्यपदार्थ दूषित हो जाते हैं, अत: ग्रहणपूर्व पके हुए भोजन आदि में ग्रहण से पूर्व तुलसीदल कुश के टुकड़े डाल देना चाहिये, जिससे वह दूषित न हों. ग्रहणकाल में जप-तप स्नान-दान का कई गुणा अधिक फल होता है. चंद्र ग्रहण एक ऐसी खगोलीय घटना है जिसने सदियों से मानव जाति को आकर्षित किया है और प्रभावित किया है. जब पृथ्वी सूर्य और चंद्रमा के बीच आती है और चंद्रमा पर अपनी छाया डालती है, तो चंद्र ग्रहण होता है. यह एक ऐसा पल होता है जब चंद्रमा का रंग लाल या तांबे जैसा हो जाता है, जिसे ब्लड मून भी कहते हैं. यह सिर्फ एक वैज्ञानिक घटना नहीं है, बल्कि कई संस्कृतियों और ज्योतिष में इसका गहरा महत्व है.

उपाय और सावधानियां- ग्रहण के दौरान मंत्रों का जाप करना, ग्रहण के बाद स्नान करके गंगाजल का छिड़काव करना.

पूजा सामग्री के सही उपयोग से घर में बनी रहेगी समृद्धि

दस दिनों तक चलने वाले गणेश उत्सव का समापन अनंत चतुर्दशी के दिन हो जाता है. इस दौरान श्रद्धालु गणपति बप्पा को धूमधाम से विदाई देते हैं. गणेश प्रतिमा के विसर्जन के बाद भक्तों के मन में अक्सर यह सवाल आता है कि पूजा में इस्तेमाल की गई अन्य सामग्री जैसे कलश, नारियल, सुपारी का क्या करना चाहिए. धार्मिक मान्यताओं के अनुसार, इन पवित्र वस्तुओं का सही तरह से विसर्जन या उपयोग करना बेहद महत्वपूर्ण है.

कलश, नारियल और सुपारी का सही विसर्जन- गणेश विसर्जन के बाद, कलश के जल को घर के कोने-कोने में छिड़कने से सकारात्मक ऊर्जा का संचार होता है. इस जल को पौधों में भी डाला जा सकता है. पूजा के बाद कलश को धोकर रसोई में चावल या अन्य अनाज भरकर रख सकते हैं या तुलसी को जल अर्पित करने के लिए इसका उपयोग किया जा सकता है.

गणेश जी को चढ़ाया गया नारियल एक पवित्र प्रसाद है. इसे विसर्जन के बाद प्रसाद के रूप में परिवार के सदस्यों में बांटा जा सकता है. इसके अलावा, इसे बहते जल में विसर्जित किया जा सकता है, या फिर लाल कपड़े में बांधकर घर के मंदिर या तिजोरी में रख सकते हैं. गणेश पूजा में इस्तेमाल की गई सुपारी को आमतौर पर किसी ब्राह्मण को दान कर दिया जाता है या बहते पानी में विसर्जित कर दिया जाता है.अगर आप धन संबंधी समस्याओं से जूझ रहे हैं, तो सुपारी को लाल कपड़े में बांधकर तिजोरी या अपने घर के धन स्थान पर रख सकते हैं.

इन दिनों में न खरीदें झाड़ू वरना आ सकता है दुर्भाग्य

वास्तुशास्त्र में घर और घर से जुड़ी तमाम चीजों को लेकर कई सारे नियम बताए गए हैं. माना गया है कि सही दिशा में किसी चीज के न होने से उसका हम पर गलत प्रभाव पड़ता है. घर के कमरों से लेकर उसके अंदर रखी सभी चीजों की ऊर्जा हमसे जुड़ी होती है. कई लोग इसे मानते हैं तो वहीं कुछ लोग इसे नजरअंदाज करते हैं.

कई चीजें ऐसी हैं जिसे नियम के अनुसार न करने पर वास्तु दोष भी लगता है और इससे जिंदगी में नकारात्मकता जगह बनाने लगती है. घर को साफ करने के काम आने वाले झाड़ू को रखने और इस्तेमाल करने को लेकर भी वास्तु नियम है. इसे खरीदने को लेकर भी कुछ नियम हैं, जिसे अगर फॉलो कर लिया जाए तो हमेशा के लिए दुर्भाग्य दूर हो सकता है.

इस दिन न खरीदें झाड़ू- जब झाड़ू खराब होने लगता है तो लोग उसे तुरंत बदल देते हैं. न समय देखते हैं और न ही दिन. वास्तु शास्त्र में झाड़ू को खरीदने से संबंधित कुछ नियम बताए गए हैं. अगर पुरानी झाड़ू को बदलकर घर में नया झाड़ू लाना है, तो इसके लिए शनिवार से बेहतर दिन कोई और नहीं हो सकता है. शनिवार को नए झाड़ू के इस्तेमाल से घर में हमेशा सकारात्मक ऊर्जा का आगमन होता है. वहीं, महीने के कृष्ण पक्ष में इसे लेना और भी शुभ माना जाता है. वहीं, मान्यता है कि शुक्ल पक्ष में झाड़ू लेने से ये घर में दुर्भाग्य लेकर आती है. ऐसे में शुक्ल पक्ष में गलती से भी झाड़ू नहीं खरीदनी चाहिए.

पितृपक्ष 2025 : पितरों को जल अर्पित करने के नियम और विधि

> पितृपक्ष की शुरुआत 7 सितंबर 2025 से हो रही है और यह 21 सितंबर 2025 तक चलेगा. यह 15 दिनों की वह अवधि है जब दिवंगत पूर्वजों को याद करते हैं और उनके प्रति श्रद्धा प्रकट करते हैं. पितृपक्ष में पितरों को जल अर्पित करना, जिसे तर्पण भी कहा जाता है, एक बहुत ही महत्वपूर्ण धार्मिक कर्म है. इस क्रिया को सही नियमों के साथ करना बेहद ज़रूरी है ताकि पितरों की आत्मा को शांति मिल सके और उनका आशीर्वाद प्राप्त हो.

पंचाग के अनुसार, इस साल पितृपक्ष की शुरुआत 7 सितंबर 2025 से हो रही है और यह 21 सितंबर 2025 तक चलेगा. यह 15 दिनों की वह अवधि है जब दिवंगत पूर्वजों को याद करते हैं और उनके प्रति श्रद्धा प्रकट करते हैं. पितृपक्ष में पितरों को जल अर्पित करना, जिसे तर्पण भी कहा जाता है, एक बहुत ही महत्वपूर्ण धार्मिक कर्म है. इस क्रिया को सही नियमों के साथ करना बेहद ज़रूरी है ताकि पितरों की आत्मा को शांति मिल सके और उनका आशीर्वाद प्राप्त हो. आइए, जानते हैं पितृपक्ष में पितरों को जल चढ़ाने के सही नियम और विधि.

जल अर्पित करने की सही दिशा

तर्पण करते समय दिशा का ध्यान रखना बहुत ज़रूरी है. पितरों को जल हमेशा दक्षिण दिशा की ओर मुख करके अर्पित करना चाहिए. दक्षिण दिशा को पितरों की दिशा माना जाता है.

कैसे करें तर्पण ? (सही विधि)

स्नान और शुद्धता- तर्पण करने से पहले स्नान करके खुद को शुद्ध करें. साफ़ और धुले हुए वस्त्र धारण करें.

सही पात्र- जल अर्पित करने के लिए तांबे, पीतल या चांदी के पात्र का उपयोग करें. प्लास्टिक या स्टील के पात्र का उपयोग वर्जित है.

कुशा और तिल का उपयोग- तर्पण के लिए कुशा (एक प्रकार की घास) और काले तिल का उपयोग अनिवार्य माना जाता है. जल में काले तिल मिलाकर अर्पित किए जाते हैं.

हाथ की सही मुद्रा- जल अर्पित करते समय अपनी अनामिका और अंगूठे के बीच कुशा और तिल रखकर जल को धीरे-धीरे पात्र से गिराना चाहिए. इस मुद्रा को पितृतीर्थ कहते हैं.

जल का प्रवाह- जल अर्पित करते समय पितृभ्य:नम: या ? पितृ देवताभ्यो नम: मंत्र का जाप करना चाहिए. जल को किसी पवित्र नदी, तालाब या जलाशय के पास प्रवाहित करना उत्तम होता है. अगर यह संभव न हो, तो घर में किसी गमले या तुलसी के पौधे को छोड़कर, किसी ऐसी जगह जल गिराएं जहां वह व्यर्थ न हो.

ये गलतियां बिल्कुल न करें ?

- **गलत दिशा में तर्पण-** दक्षिण के बजाय किसी अन्य दिशा में जल अर्पित न करें.
- **अशुद्ध अवस्था-**बिना स्नान किए और अशुद्ध वस्त्र पहनकर तर्पण न करें.
- **लोहे या स्टील का पात्र-** तर्पण के लिए लोहे या स्टील के बर्तनों का उपयोग बिल्कुल न करें.
- **जूते-चप्पल पहनकर तर्पण-** कभी भी जूते-चप्पल पहनकर तर्पण नहीं करना चाहिए.

पितृपक्ष का महत्व

हिंदू धर्म में पितृपक्ष का विशेष महत्व है. मान्यता है कि इन 15 दिनों के दौरान पितर पृथ्वी पर अपने वंशजों से मिलने आते हैं. इस दौरान किए गए श्राद्ध, तर्पण और पिंडदान से उनकी आत्मा तृप्त होती है और वे अपने वंशजों को सुख, समृद्धि और शांति का आशीर्वाद देते हैं.